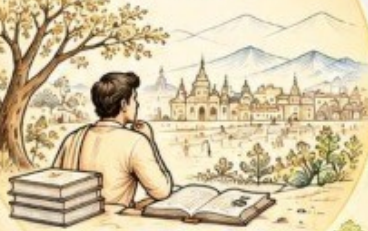


तारतम वाणी में समग्र साधना के पाँच आयाम

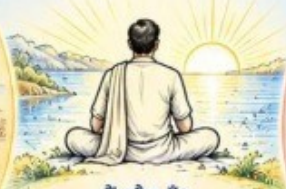
जानने से जागने, जागने से पहचानने और पहचान से प्रेमपूर्वक जीने की ओर

1. दृष्टि की परिपक्वता Growing Up



मान्यता से विवेक की ओर
सीमित दृष्टि से व्यापक दृष्टि की ओर

2. विस्मृति से याद की ओर Waking Up



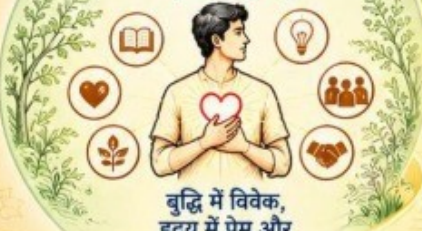
मैं कौन हूँ?
मैं किसकी हूँ?
मेरी सुरता किस ओर है?

3. अपनी छाया को प्रकाश में लाना Cleaning Up



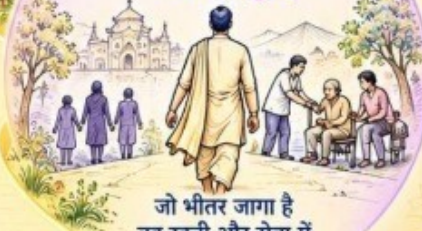
जो भीतर छिपा है
उसे दबाएँ नहीं —
पहचानें और रूपांतरित करें

4. अपनी क्षमताओं को खोलना Opening Up



बुद्धि में विवेक,
हृदय में प्रेम और
संबंधों में संवेदनशीलता

5. जागृति को जीवन में उतारना Showing Up



जो भीतर जागा है
वह रहनी और सेवा में
दिखाई दे

पाँच आत्म-परीक्षण प्रश्न

- मेरी दृष्टि कितनी व्यापक हो रही है?
- मेरी सुरता किस ओर जाग रही है?
- मेरे भीतर क्या रूपांतरण माँग रहा है?
- मेरी कौन सी क्षमताएँ अभी खुलनी हैं?
- जो भीतर जागा है वह मेरी रहनी और सेवा में कहाँ दिखाई दे रहा है?

दृष्टि परिपक्व हो • सुरता जागे • अंतःकरण निर्मल हो • क्षमताएँ खुलें • जागृति रहनी और सेवा बने।

इस प्रकार तारतम वाणी पूरे जीवन को देखने, स्वयं को पहचानने और प्रेमपूर्वक जीने का दर्पण बनती है।



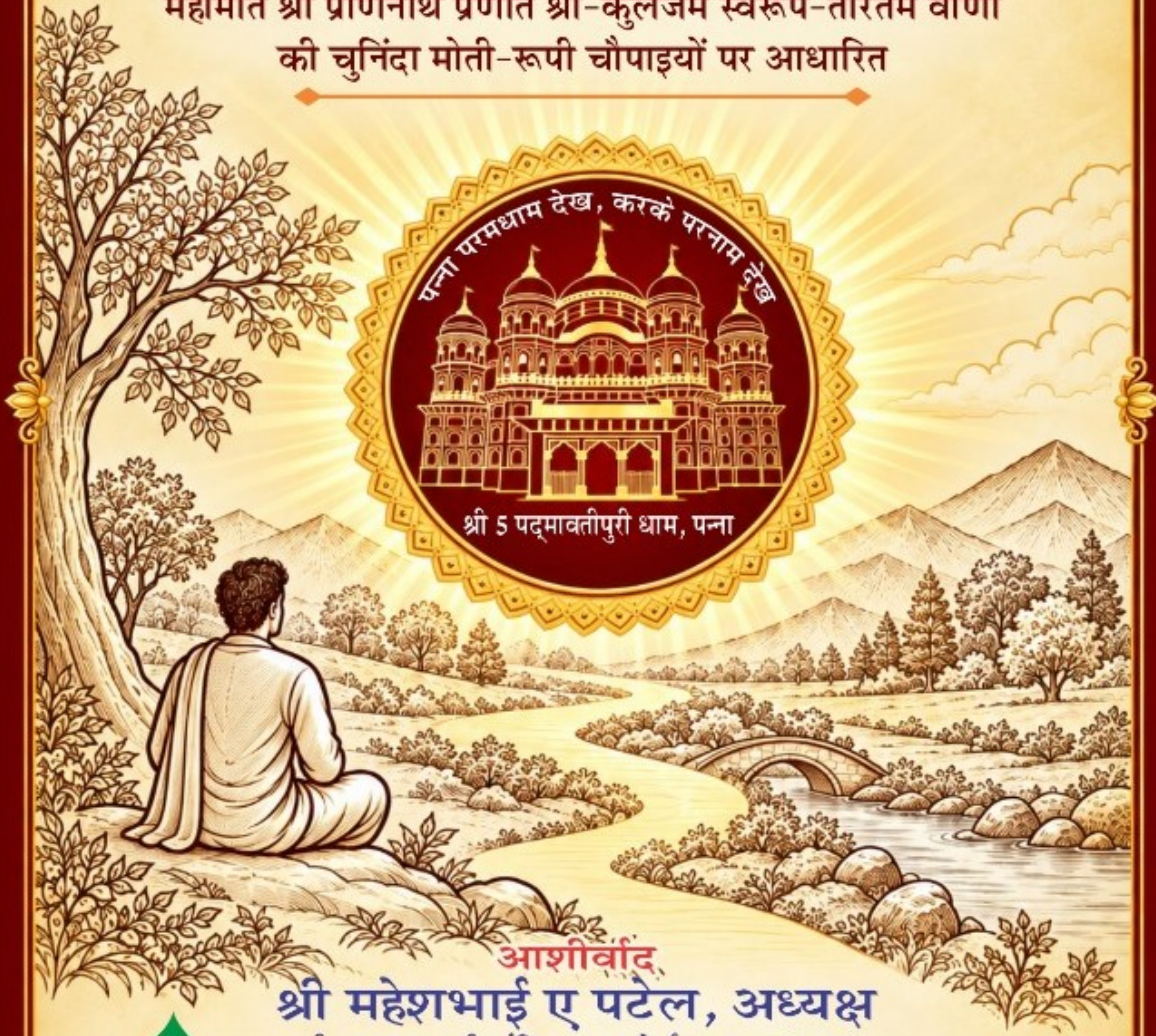
श्री प्राणनाथ जी मंदिर, श्री निजानंद आश्रम, वडोदरा, गुजरात

जीवन की राह

श्री प्राणनाथ तारतम वाणी के प्रकाश में

जीवन के अनुभवों, संबंधों और उलझनों से
जागृति, ध्यान, चितवनी और प्रेम की ओर

महामति श्री प्राणनाथ प्रणीत श्री-कुलजम स्वरूप-तारतम वाणी
की चुनिंदा मोती-रूपी चौपाइयों पर आधारित



आशीर्वाद

श्री महेशभाई ए पटेल, अध्यक्ष

श्री प्राणनाथ जी मंदिर ट्रस्ट बोर्ड, पन्ना, (म.प्र.)

लेखक

नरेंद्र आर पटेल एवं मनुभाई ए पटेल

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान, श्री निजानन्द आश्रम, वडोदरा



जीवन की राह

श्री प्राणनाथ तारतम वाणी के प्रकाश में
जीवन के अनुभवों, संबंधों और उलझनों से
जागृति, ध्यान, चितवनी और प्रेम की ओर

महामति श्री प्राणनाथ प्रणीत श्री कुलजम
स्वरूप-तारतम वाणी की चुनिंदा मोती-रूपी
चौपाइयों पर आधारित

आशीर्वाद : श्री महेशभाई ए पटेल, अध्यक्ष
श्री प्राणनाथ जी मंदिर ट्रस्ट बोर्ड, पन्ना, म. प्र.
लेखक: नरेंद्र आर पटेल एवं मनुभाई ए पटेल

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान,
श्री निजानन्द आश्रम, वडोदरा

प्रकाशक : श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान, श्री निजानंद
आश्रम, वड़ोदरा, आजवा निमेटा चोकड़ी, N.H. 8 बायपास, पो.
सयाजीपुरा, वड़ोदरा 390019 गुजरात;

फोन: +91-9898000168, +91-7874151371

+1-973-760-9238 Email: jagni7@yahoo.com

Web: Nijanand.org, Chhatrasal.com, Sundersath.com,

YouTube: The Prannath Multimedia

Title: जीवन की राह: श्री प्राणनाथ तारतम वाणी के प्रकाश में
लेखक : नरेन्द्र आर पटेल, M.S. C.S.P.(Retd.), U.S.A. एवं
मनुभाई ए पटेल, श्री प्राणनाथ मल्टी-मीडिया निर्माता

समर्पित: ब्रह्मलीन धर्मवीर जागनी रत्न पूज्य सरकार श्री के 26 वें
स्मृति समारोह पर नवनिर्मित श्री प्राणनाथ जी मंदिर,
वड़ोदरा के सेवा पथरावनी महोत्सव पर।

COPYRIGHT © 2026 श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान
All Rights Reserved प्रथम संस्करण: 2026

ISBN : 978-93-7026-323-9

मूल्य : प्रेम सेवा के पुष्प

प्रेम और सम्मान सहित
बाहर का दीप मार्ग दिखाता है;
ज्ञान का दीप भीतर देखने की दृष्टि देता है ।

परब्रह्म स्वरूप अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी मंदिर की धर्मधरा पर आपका हार्दिक स्वागत है । आप किसी भी परम्परा, पृष्ठभूमि या जिज्ञासा के साथ आए हों—यह स्थान प्रेम, सम्मान और आत्म-चिंतन के लिए आप की सेवा में खुला है ।

ब्रह्मज्ञान की यह प्रसादी श्री प्राणनाथ तारतम वाणी के उन जीवन-सूत्रों को सरल भाषा में सामने रखती है जो मन, संबंध, चिंता, दुःख, सेवा, आत्म-पहचान, ध्यान-चितवनी और सच्चिदानंद परमात्मा से मूल सम्बन्ध को एक विशिष्ट दृष्टि से देखने का निमंत्रण देती हैं ।

कृपया, आप इन वचनों को विचारें, अनुभव में परखें और जो सत्य हृदय में स्पष्ट होता जाए, उसे जीवन में उतारकर देखें । आपका जीवन निजानंद की अनुभूति से आलोकित हो—यही मंगलकामना ।

*Come with an open heart. Look within. Discover
for yourself. Let the light of Tartam wisdom
become the light of your life.*

इस पुस्तक की अंतर्यात्रा

यह अंतर्यात्रा विस्मृति से खोज, खोज से आत्म-पहचान, आत्म-पहचान से अंतःशुद्धि और रहनी, फिर समर्पण, सुरता और चितवनी से होती हुई प्रेम, मूल की पहचान और आनंदमय जीवन की ओर ले जाती है।

यह यात्रा कोई सीधी या कठोर सीढ़ी नहीं है। जीवन में हम इन पड़ावों पर बार-बार लौटते हैं। उद्देश्य किसी ऊँची अवस्था का दावा करना नहीं, बल्कि अपनी सुरता को अधिक जागृत, हृदय को अधिक निर्मल और जीवन को अधिक प्रेमपूर्ण बनाना है।

हर पन्ने में एक सरल संदेश, तारतम्य वाणी की चौपाई और जीवन में उतारने का एक सूत्र है। चाहें तो कोई एक अध्याय को सात दिन पढ़ें, विचारें और अपनी रहनी में उतारकर देखें।

“Through life’s experiences, relationships, and uncertainties, the inner journey unfolds—not as a ladder to climb, but as a return: from forgetfulness to remembrance, from seeking to self-discovery, and from awareness and Chitwani to love, surrender, and joyful living.”

भाग 1 विस्मृति से जागृति की ओर

यात्रा बाहर से नहीं,
भीतर उठे एक प्रश्न से शुरू होती है
अपनी विस्मृति और जीवन की क्षणभंगुरता
को पहचानते हुए
'मेरा-मेरा' से आगे बढ़कर
यह पूछना:
“मैं वास्तव में कौन हूँ?”
यहीं से सच्ची खोज आरंभ होती है।

“The journey begins not outside, but with a question within: beyond ‘mine and me,’ who am I really? That is where the true search begins.”

1.1 मैं कौन हूँ?

भूमिकाएँ निभाइए-पर उनमें स्वयं को खोइए मत ।

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानों ॥

हम पिता, माता, पति, पत्नी, व्यवसायी, शिक्षक या सेवक जैसी अनेक भूमिकाएँ निभाते हैं । ये महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यह हमारी सम्पूर्ण पहचान नहीं । शरीर बदलता है, विचार बदलते हैं, भावनाएँ बदलती हैं और भूमिकाएँ भी बदलती रहती हैं । लेकिन इन सभी बदलावों को देखने वाला कौन है ?

पहले अपने आपको – अपने सच्चे स्व को पहचानो । यही मनुष्य का परम और प्रथम धर्म है, जो परब्रह्म पहचान का प्रवेश द्वार है ।

*You are more than the roles you play
and the thoughts you carry.*

1.2 जीवन क्षणभंगुर है

आत्म-जागृति के लिए सबसे सही समय वही है,
जो अभी हमारे हाथ में है ।

नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन ।
ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन ॥

हम जानते हैं कि जीवन स्थायी नहीं है, फिर भी जो सबसे आवश्यक है उसे अक्सर कल के लिए टालते रहते हैं । जीवन वर्षों के भरोसे नहीं, एक-एक श्वास पर टिका है ।

यह स्मरण डराने के लिए नहीं, जगाने के लिए है । जो सत्य आज समझा जा सकता है, जो प्रेम आज दिया जा सकता है और जो आत्म-जागृति आज आरम्भ हो सकती है-उसे भविष्य के लिए क्यों टालें ?

*Life is measured not by years,
but by breaths—let this breath be awake.*

1.3 आत्म-विस्मृति के कलंक से बचो

“संसार में रहो, अपने दायित्व निभाओ-पर क्षणभंगुर माया के प्रभाव में अपने निज स्वरूप और प्रियतम को मत भूलो ।”

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग ॥

संसार की परिस्थितियाँ, आकर्षण और चिंताएँ इतनी वास्तविक लग सकती हैं कि हम जानते हुए भी अपने आत्म-स्वरूप और प्रियतम से निज संबंध को भूलने लगते हैं ।

यह मायावी संसार स्थायी नहीं है; जो आज बहुत बड़ा दिखाई देता है, वह भी एक दिन बीत जाएगा । इसलिए संसार से भागना नहीं, बल्कि उसके बीच रहते हुए उसके प्रभाव में अपनी सुरता और पहचान को खोने से बचना है । जीवन ऐसा जिएँ कि क्षणभंगुर माया हमारे भीतर विस्मृति का दाग न छोड़ जाए ।

“Live fully in the world, but never let the temporary make you forget the Eternal.”

1.4 'मेरा-मेरा' का बोझ छोड़ें

कर्तव्य हमारा है; जिम्मेदारियाँ उठाइए, पूरा ब्रह्मांड नहीं।
अंतिम नियंत्रण परमात्मा का है।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे ॥

घर, परिवार, धन, कार्य और संबंधों के प्रति हमारी जिम्मेदारियाँ हैं। समस्या जिम्मेदारी में नहीं, उस मानसिक बोझ में है जिसमें हम मान बैठते हैं कि सब कुछ मेरे ही नियंत्रण से चलना चाहिए। हम जानते हैं कि एक पल की चौथाई का भी भरोसा नहीं है, फिर भी सर्जनहार के चरणों में समर्पित नहीं होते।

तारतम्य दृष्टि जिम्मेदारियों से भागना नहीं सिखाती। अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाइए, लेकिन स्वयं को सम्पूर्ण व्यवस्था का नियंत्रक मत मानिए।

*Carry your responsibilities,
but do not carry the whole universe on your head.*

1.5 अपनी सबसे बड़ी भूल पहचानें

बंधन से मुक्त होने का पहला कदम
सबसे गहरी भूल रास्ता भूलना नहीं,
अपने घर की पहचान विस्मृत हो जाना है ।

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात ।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात ॥

मनुष्य का सबसे बड़ा बंधन हमेशा बाहर नहीं होता ।
एक गहरी विस्मृति की भूल भीतर है-अपने वास्तविक स्वरूप,
अपने मूल सम्बन्ध और परम सत्य को भूल जाना । यही विस्मृति
हमें मोह, चिंता और सीमित पहचान में बाँधती रहती है । अपनी
आत्मा के प्रियतम परब्रह्म को भुल जाना ही फ़रामोशी है ।

जागृति की शुरुआत तब होती है जब हम स्वयं से पूछते
हैं-मैं वास्तव में कौन हूँ ? और मेरा मूल सम्बन्ध किससे है ?

*The deepest bondage is not losing the way,
but forgetting where home is.*

1.6 खोजते रहिए

आध्यात्मिकता प्रश्नों से डरती नहीं
खोजिए • विचारिए • अनुभव में परखिए • आगे बढ़ते रहिए

खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारैपार ।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार ॥

“मैं कौन हूँ ?” का प्रश्न किसी तैयार उत्तर पर समाप्त नहीं होता; वहीं से वास्तविक खोज शुरू होती है । परब्रह्म परमात्मा की सोहागिन आत्मा निरंतर अपने स्वरूप, धाम और धनी को खोजती रहती है ।

सच्चा जिज्ञासु सुनता है, विचार करता है, अनुभव में परखता है और नई समझ और सेवा के लिए हमेशा खुला रहता है । पुरानी उपलब्धियों पर स्थिर नहीं होता । ईमानदार प्रश्न कमजोरी नहीं-कई बार गहरी जागृति का द्वार होते हैं ।

*A living faith does not fear questions;
it grows through sincere seeking.*

भाग 2

दृष्टि को भीतर मोड़ना

दुनिया को देखने से पहले
उस मन को देखिए,
जो दुनिया को देख रहा है ।

मन को देखना →
अंतःकरण को निर्मल करना →
भीतरी शत्रु और छाया पहचानना →
आत्म-परीक्षण →
विनम्रता और गुण-दृष्टि ।

*“Before you examine the world,
examine the mind through which you see it.”*

2.7 मन की दिशा

मन अच्छा सेवक हो सकता है-उसे अपना स्वामी न बनने दें।
मन स्वामी बने तो फजीती, विवेक के अधीन रहे तो साहेबी।

मन के हारे हारिये, मन के जीते जीत।

मन ही देवे सत साहेबी, मन ही करे फजीत ॥

मन में कोई विचार उठे-यह जरूरी नहीं कि वह सत्य हो।
कोई आशंका आए-यह जरूरी नहीं कि वह सच हो। क्रोध उठे-यह
भी जरूरी नहीं कि उसी क्षण प्रतिक्रिया दी जाए। मन में उठने वाली
हर बात को सत्य मान लेना ही मन के हाथों हारना है।

इसलिए प्रतिक्रिया से पहले ठहरें और पूछें-यह तथ्य है या
मेरे मन की बनाई व्याख्या? विचलित मन भ्रम, भय और आवेग में
निर्णय कराकर फजीती करा सकता है; वही मन जब जागृत बुद्धि
और विवेक से संचालित होता है, तो सच्ची साहेबी की ओर ले
जाता है। इसलिए मन को दबाएँ नहीं, उसके पीछे अंधे होकर चलें
भी नहीं-उसे देखें, परखें और सही दिशा दें।

*You may not choose every thought,
but you can choose which one you follow.*

2.8 बाहर से पहले भीतर को निर्मल करें

वास्तविक शुद्धि की साधना वहाँ से शुरू होती है, जहाँ कोई दूसरा नहीं देखता-अपने हृदय से।

अंदर नहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार ॥

बाहरी स्वच्छता, धार्मिक आचरण और कर्मकाण्ड का अपना स्थान है, लेकिन यदि भीतर ईर्ष्या, अहंकार, छल, आसक्ति और दिखावा बना रहे तो साधना निरर्थक या अधूरी है। एक करोड़ बार भी क्यों न कर लें, बाह्योपचार मात्र से परमात्मा नहीं मिल सकते।

वास्तविक शुद्धि अपने हृदय, उद्देश्य और प्रतिक्रिया को ईमानदारी से देखने से शुरू होती है।

*True cleansing begins where no one else can
see-in the heart.*

2.9 अपने भीतर के शत्रुओं को पहचानें

सबसे बड़ी लड़ाई हमेशा बाहर नहीं होती। भीतर के शत्रु को पहचान लेना ही आंतरिक वीरता की शुरुआत है।

तम सूं जुध करे घेन धारण, लज्या ने अहंकार।
कायर ने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार ॥

कई बार हम सत्य को समझते हैं, फिर भी उस पर चल नहीं पाते। जड़ता, अहंकार, भय, लोक-लज्जा और भ्रमित विचार हमारे भीतर ही रहकर हमारी जागृति में बाधा बनते हैं। जब हम कायर की भाँति इन भीतरी कमजोरियों का सामना करने से डरते हैं, तो वे हम पर हावी होकर सत्य के अनुसार जीने से रोकती हैं।

वास्तविक वीरता बाहर से लड़ने में नहीं, अपने भीतर की बाधाओं को पहचानकर उनका सामना करने में है। क्योंकि जिसे हम स्पष्ट रूप से देख लेते हैं, उससे मुक्त होने का मार्ग खुलने लगता है।

The greatest battles are often fought silently within.

2.10 अपनी छाया को पहचानें

भीतर की अनदेखी प्रवृत्तियाँ हमारी रहनी को प्रभावित करती हैं

अपनी छाया सों आप बिगूती, बल खोए चली हार ।

आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार ॥

कई बार हमारा सबसे बड़ा बंधन बाहर नहीं, बल्कि अपनी ही छाया होती है-तृष्णा, अहंकार, भय, ईर्ष्या, दबी भावनाएँ और पुराने संस्कार। ये हमारी दृष्टि को धुँधला कर आत्मिक बल को कमजोर करते हैं ।

छाया में केवल विकार ही नहीं, दबे हुए सद्गुण और क्षमताएँ (*Golden Shadow*) भी हो सकती हैं । जागनी छाया को दबाना नहीं, उसे पहचानकर बदलना है । इसलिए दूसरों को दोष देने से पहले अपने भीतर देखें, विकारों को रूपांतरित करें और छिपे सद्गुणों को जगाएँ । भीतर की जागनी जब रहनी में दिखाई दे, तभी उसका वास्तविक अर्थ है ।

“Bring your shadow into awareness; let that awareness transform the way you live.”

2.11 पहले अपने भीतर देखें

“दूसरों के दोष देखने से पहले अपने भीतर देखें-बाहर दिखता दोष कभी हमारी छाया भी हो सकता है।”

पगला पोताना जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छो दोष ।
सास्त्र अर्थ समझया नथी, तां जातो नथी रिदे रोष ॥

हम अक्सर अपनी कमियों को देखे बिना दूसरों की गलतियाँ जल्दी पहचान लेते हैं। कई बार जो बात हमें दूसरे में बहुत परेशान करती है, वह हमारे भीतर छिपे अहं, चोट, भय या अस्वीकार किए गए पक्ष को भी दिखा सकती है।

दोषारोपण से पहले स्वयं के भीतर देखें और अपने रोष के मूल कारण को समझें। सच्चा ज्ञान वही है जो दूसरों को सुधारने से पहले स्वयं को देखने, समझने और बदलने की दिशा दे।

“Before judging another, look within; what disturbs us outside may reveal a shadow inside.”

2.12 विनम्रता

जागृति हमें बड़ा नहीं-सरल बनाती है
ज्ञान बढ़े तो नम्रता बढ़े; भक्ति बढ़े तो प्रेम बढ़े ।

अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु समान ।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान ॥

यदि ज्ञान बढ़ता जाए और साथ में अहंकार भी बढ़े, तो ज्ञान अभी हृदय तक नहीं पहुँचा । सच्ची जागृति व्यक्ति को अधिक ग्रहणशील, करुणामय और सरल बनाती है । विवाद में पूछें-मैं सत्य समझना चाहता हूँ, या केवल स्वयं को सही सिद्ध करना चाहता हूँ ?

यदि आप चतुर और सुज्ञानी हैं, तो सचेत होकर जागें । सुन्दरसाथ के संग जितना भी रहें, विनम्रता से रहें । इस समय जागने का सच्चा फल यही है ।

*True awakening makes us
deeper, not greater; humbler, not smaller.*

2.13 अवगुण नहीं, गुण भी देखें

दृष्टि बदलती है तो संबंध भी बदलते हैं। अहंकार पूछता है-मैं कैसे जीतूँ ? प्रेम पूछता है-हम दोनों कैसे बेहतर हो सकते हैं ?

अवगुण काढे गुण ग्रहै, हारे से होए जीत ।
साहेब से सनमुख सदा, ब्रह्मसृष्टि एह रीत ॥

हर व्यक्ति में गुण और कमियाँ दोनों होते हैं; चुनाव हमारा है कि हम क्या देखें। गुण ग्रहण करना गलत को सही मानना नहीं, बल्कि किसी की कमजोरी को उसकी पूरी पहचान न बनाना है।

मतभेद हो तब भी सामने वाले के गुण देखें और अपना ध्यान परमात्मा के चरणों में रखें। दोषों को पकड़कर रखने के बजाय गुण ग्रहण कर आगे बढ़ना-यही “लेट गो” की भावना और ब्रह्मात्मा की रहनी है।

*What we choose to see in others
gradually shapes what grows within us.*

भाग 3

ज्ञान से रहनी की ओर

जो ज्ञान भीतर जागा है,
वह हमारे व्यवहार में भी दिखाई दे ।

हृदय निर्मल हो →

व्यवहार संवेदनशील हो →

वाणी मधुर हो →

भाव सेवा में उतरे →

और ज्ञान रहनी बन जाए ।

यही जानने से जीने की यात्रा है ।

“Let the wisdom awakened within become visible in the way we live-through a pure heart, gentle words, compassionate actions, and selfless service. This is the journey from knowing to being.”

3.14 कसाला मिले तो सुरता कहाँ रखें ?

दूसरे का व्यवहार उसके हाथ में है;
अपनी सुरता की दिशा हमारे हाथ में है ।

कोई देत कसाला तुम को, तुम भला चाहियो तिन ।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन ॥

यदि कोई हमें कष्ट दे, तब भी उसका बुरा न चाहें । धाम की सुध और प्रियतम से अपने मूल सम्बन्ध की स्मृति न छोड़ें । सुरता को चोट, क्रोध या बदले में उलझाने के बजाय प्रियतम की ओर लौटाएँ । अन्याय को विवेक पूर्वक रोकें, पर हृदय में द्वेष न रखें । यही तुम्हारे आनंद का मार्ग है । यही चितवनी है-व्यवहार में विवेक, हृदय में करुणा और सुरता में प्रियतम ।

*“Do not let another person’s hurtful behavior
decide the direction of your heart.
Keep your boundaries clear,
your heart free from hatred,
and your awareness turned toward the Beloved.”*

3.15 किसी का दिल न दुखाएँ

आध्यात्मिकता की एक सरल कसौटी
निर्मल हृदय की पहचान हमारे व्यवहार में दिखाई देती है ।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।
साफ दिल सोहागनी, कबहूँ ना दुखावे किन ॥

त्रिगुणातीत प्रेम-मार्ग की रहनी है-सात्त्विक जीवन, निर्मल हृदय और किसी को दुःख न देने का भाव । इसका अर्थ यह नहीं कि हम हमेशा सबको प्रसन्न रखें । कभी सत्य कहना, “नहीं” कहना या उचित सीमा बनाना भी आवश्यक है; पर दृढ़ता कठोरता न बने ।

बोलने से पहले पूछें-क्या यह सत्य है ? क्या यह आवश्यक है ? क्या इसे प्रेम और सम्मान से कहा जा सकता है ? मन, वाणी और कर्म से किसी का हृदय न दुखे-यही रहनी है ।

*A pure heart is known
by the care it brings into another heart.*

3.16 आँखों में शीतलता, वाणी में माधुर्य

हमारी उपस्थिति से दूसरों को कैसा अनुभव होता है ?

आँखों में करुणा • वाणी में मधुरता • व्यवहार में सम्मान

अब दुख ना देऊं फूल पांखड़ी, देखूँ शीतल नैन ।

उपजाऊं सुख सबों अंगों, बोलाऊं मीठे बैन ॥

साधना केवल यह नहीं कि हम क्या सोचते हैं; यह भी है कि हमारे साथ रहने पर दूसरे व्यक्ति को कैसा अनुभव होता है । सत्य बोलें, पर उसे अपमान या चोट का हथियार न बनाएँ ।

जिस परमात्मा के हम अंग हैं, जब वे किसी को फूल की पंखुड़ी की चोट जितना भी दुःख न देने का वचन देते हैं, तो हमें भी दिन के अंत में पूछना चाहिए कि-आज मेरी वाणी और व्यवहार से अधिक शांति मिली या अधिक तनाव ?

हर दिन अपनी वाणी और व्यवहार को परखें, ताकि आपके कारण संसार में शांति और करुणा बढ़े ।

*Let your eyes carry kindness,
your words sweetness, and your presence peace.*

3.17 सेवा: पूजा का जीवन में विस्तार

परमात्मा के सामने झुकना भक्ति है;

उनकी सृष्टि के काम आना सेवा है।

मुख्यी सेवा तूने सी कहूँ, जो तू अंतर आडो टाल।

अनेक विध सेवा तणी, तूने उपजसे तत्काल ॥

सेवा की महिमा शब्दातीत है। निश्चित जानो कि यदि तुम अपने भीतर की आड़ हटा दें, तो सेवा की अनेक प्रेरणाएँ इसी क्षण हृदय में जाग्रत हो जाएंगी। तुम्हारा अहंकार, संकोच, स्वार्थ और उदासीनता ही वह आड़ है, जिससे सेवा का अवसर नजर नहीं आता।

तन, मन और धन-हर प्रकार की सेवा का अपना मूल्य है। किसी को समय देना, सहारा देना या उसका काम हल्का करना भी सेवा है। आज ऐसी एक सेवा करें जिसमें न दिखावा हो, न प्रशंसा की अपेक्षा-केवल किसी का जीवन थोड़ा सहज बनाने का भाव हो।

Worship bows before the Divine;

Service recognizes the Divine in life.

3.18 ज्ञान केवल जानना नहीं-जीकर दिखाना है

रहनी ही ज्ञान की कसौटी है

ज्ञान का प्रमाण यह नहीं कि हम कितना बता सकते हैं
बल्कि यह कि हम कितना जी सकते हैं।

केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन ॥

ग्रंथ पढ़ना, सत्संग सुनना, विचार और चितवन करना मूल्यवान है; लेकिन जागनी की इस घड़ी में ज्ञान को रहनी में उतारना आवश्यक है। तारतम ज्ञान का प्रकाश मिलने के बाद प्रश्न यह है-उससे मेरे जीवन में क्या बदला ? क्या क्रोध कम हुआ, वाणी मधुर हुई, क्षमा और सेवा बढ़ी ?

ज्ञान जब आचरण में दिखाई दे, तभी कहनी रहनी बनती है। केवल जानना नहीं-जाना हुआ जीना ही जागनी का फल है। इसी से अखंड परमधाम के सुंदरसाथ संसार में पहचाने जाएंगे।

Wisdom becomes real

when what we know begins to shape how we live.

3.19 एक-दूसरे को जगाते रहें

“मैं भूलूँ तो तुम मुझे प्रेम से जगाओ; तुम भूलो तो मैं तुम्हें-
हम एक-दूसरे की जागनी के सहयात्री बनें।”

मैं भूलों तो तू मुझे, पल में दीजे बताए।

तू भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए ॥

आध्यात्मिक यात्रा केवल अकेले आगे बढ़ने की यात्रा नहीं; हम एक-दूसरे की जागनी के सहयात्री भी हैं। जब मैं अपने सत्य, निज पहचान या प्रियतम की याद से भटकूँ, तो तुम प्रेमपूर्वक मुझे सावचेत करो; और जब तुम भूलो, तो मैं तुम्हें जगाऊँ।

सच्चा संबंध वह है जिसमें हम एक-दूसरे की विस्मृति को दोष न बनाकर तारतम ज्ञान, प्रेम और करुणा से याद दिलाने का अवसर बनाते हैं। इस प्रकार हम एक-दूसरे को विस्मृति से जागनी और जागनी से निज संबंध की ओर बढ़ने में सहायक बनते हैं।

*“True companionship is helping each other
remember when either of us forgets.”*

भाग 4 चिंता से चितवनी की ओर

जो हमारे हाथ में है, उसे पूरी निष्ठा से करें;
जो हमारे हाथ में नहीं, उसका बोझ मन पर न रखें।
चिंता को विश्वास में बदलें → दुःख में सही दृष्टि रखें →
सुरता को भीतर लौटाएँ → प्रियतम की याद में रहें →
और याद को चितवनी में गहरा होने दें।
यही चिंता से चितवनी की यात्रा है।

*“Do with devotion what is in your hands, and
release what is not. As worry gives way to trust and
awareness turns inward, remembrance of the
Beloved deepens into Chitwani—an abiding
presence of love and peace.”*

4.20 चिंता से जागरूकता की ओर

जो हाथ में है, उसे सजगता से करें

कर्तव्य से पीछे न हटें;

लेकिन चिंता को अपना स्वामी भी न बनने दें।

हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुकम।

इत हमारा पिया जी क्या चले, ज्यों जानों त्यों करो खसम ॥

चिंता को दो भागों में बाँटें-“मेरे हाथ में” और “मेरे हाथ में नहीं।” जो हमारे हाथ में है, उसमें प्रेम और सेवाभाव से अपना सर्वोत्तम कर्म करें। जो हमारे हाथ में नहीं है, उसे बार-बार मन में दोहराकर चिंता बढ़ाने के बजाय प्रियतम परमात्मा को सौंपने का अभ्यास करें।

रात को शांत भाव से कहें-“आज जितना मेरे हाथ में था, मैंने किया; बाकी आपको सौंपता हूँ। आप जैसे चाहें, वैसे हमें रखें। यहाँ हमारा कुछ नहीं-आपकी इच्छा हमें शिरोधार्य है। मुझे विश्वास है कि आपकी कृपा और प्रेम सदा मेरे साथ हैं।

*”Do what is in your hands with sincerity;
place the rest in the hands of the Divine.*

4.21 चिंता से चितवनी की ओर

फिकर से जिकर, जिकर से स्मरण

प्रियतम की जिकर का स्मरण फिकर को विश्वास में ढाल सकता है ।

और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर ।
मेरी तुम पीछे करत हो, क्यों कर ना देखी फिकर ॥

चिंता में हमारी सुरता बार-बार भविष्य की ओर भागती है-क्या होगा, कैसे होगा ? तारतम वाणी इस फिकर को प्रियतम परमात्मा के प्रेम और विश्वास की ओर मोड़ती है ।

प्रियतम स्मरण कराते हैं-मैं तुम्हारी जिकर पहले से कर रहा हूँ; फिर मेरी तुम्हारे प्रति फिकर और प्रेम को क्यों भूलते हो ?

इसलिए “मेरे साथ क्या होगा ?” के बजाय पूछें- “प्रियतम की इच्छा में रहते हुए अभी मेरा सही कर्म क्या है?” तब फिकर विश्वास में, जिकर स्मरण में और स्मरण चितवनी में गहराने लगता है ।

*When you remember that
the Beloved remembers you first,
worry begins to soften into trust.*

4.22 दुःख के बीच दृष्टि

दुःख को नकारें नहीं-उसमें अपनी पहचान भी न खोएँ
दुःख जीवन का एक अनुभव है, पूरा जीवन नहीं।
उसे स्वीकारें, पर स्वयं को उसी तक सीमित न कर लें।

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी।
याद करो निज सुख को, तो दुख तुमथे भागसी ॥

आध्यात्मिक दृष्टि दुःख को नकारना नहीं सिखाती।
बीमारी में उपचार, हानि में शोक और अन्याय में उचित कदम
आवश्यक हैं। पर दुःख एक अनुभव है, हमारी पूरी पहचान नहीं।
जब हम स्वयं को दुःख से ही जोड़ लेते हैं, तो पीड़ा और गहरी हो
जाती है। इसके विपरीत, निजस्वरूप के स्वाभाविक प्रेमानंद की
स्मृति हमें दुःख के बीच भी संभाले रखती है।

कठिन समय में स्वयं से पूछें-“इस परिस्थिति में मेरा
अगला सही कदम क्या है, और मैं अपने मूल आनंद की स्मृति
कैसे बनाए रखूँ?”

*Pain may enter your life;
it need not become the whole of your life.*

4.23 जगत का खेल और जागनी

जीवन के हर अनुभव में मेहेर को पहचानें-आज जो खेल दिखाई देता है, वही हमारी जागनी और मिलन का माध्यम बन सकता है।

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।

मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन ॥

यह जगत केवल उलझने का स्थान नहीं, बल्कि प्रियतम की मेहेर में जागने और अपने मूल स्वरूप को पहचानने का अवसर है। ब्रह्मात्मा जीवन के अनुभवों के बीच अपने निज स्वरूप और प्रियतम के प्रेम को पहचानती है। यह जागनी केवल अपने प्रयास से नहीं, परब्रह्म की मेहेर से होती है, जो विस्मृति से जगाकर मिलन की ओर ले जाती है। इसलिए जीवन के हर अनुभव को शिकायत नहीं, मेहेर और जागनी की दृष्टि से देखें।

See life through the eyes of Grace; even the play of the world can become a path to awakening.

4.24 सुरता को लौटाना

पाँच मिनट की दैनिक साधना

साधना जीवन से भागना नहीं;

जीवन में अधिक जागकर लौटना है ।

फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन ।
इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन ॥

एक मिनट शांत श्वास ।

एक मिनट शुक्राना ।

एक मिनट मन को देखना ।

एक मिनट प्रियतम परमात्मा का प्रेम-स्मरण ।

एक मिनट आज का संकल्प ।

सुरता भटके तो स्वयं पर नाराज़ न हों;

उसे कठोरता से नहीं,

बार-बार प्रेम से लौटाएँ ।

*When awareness wanders,
gently return it to what you truly love.*

4.25 याद ही जागनी है

निज सुख की स्मृति से इश्क और सन्मुखता तक
संसार के काम करते रहो, पर सुरता में निज सुख और प्रियतम की
याद बनाए रखो-यही जागनी है ।

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख ॥

सच्ची जागनी केवल आध्यात्मिक बातें जानना नहीं, बल्कि अपने निज स्वरूप, परमधाम और प्रियतम से निज संबंध की याद में जीना है। संसार के दायित्व निभाते हुए भी भीतर निज सुख और प्रियतम की याद बनी रहे-यही जागनी का जीवंत रूप है । धीरे-धीरे यह याद सुरता की सहज दिशा बनकर प्रियतम के प्रति इश्क को गहरा करती है । जब याद प्रयास न रहकर जीवन की स्वाभाविक पृष्ठभूमि बन जाती है, तब प्रियतम के सन्मुख होने की अनुभूति भी गहरी होने लगती है ।

*Awakening is living in remembrance
until remembrance becomes love,
and love becomes Presence.*

4.26 हाथी-सा धैर्य, सुई के छेद-सी एकाग्रता

दृढ़ कदम • सूक्ष्म सुरता

दृढ़ता हाथी जैसी हो; एकाग्रता सुई में उतरते धागे जैसी ।

इत चल तू हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए ।

पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए ॥

इस संसार रूपी मंच पर हाथी जैसी दृढ़ता और धैर्य के साथ आगे बढ़ें । प्रेम और विश्वास को अपना संबल बनाएँ । जैसे हाथी मार्ग की रुकावटों को हटाकर आगे बढ़ता है, वैसे ही तारतम्य ज्ञान के प्रकाश में जीवन के भ्रम, भटकाव और बाधाओं को पार करते हुए अपनी बिखरी सुरता को समेटकर प्रियतम परमात्मा की ओर केंद्रित करते चलें ।

अहंकार को छोड़कर नम्रता अपनाएँ । साधना में दृढ़ता हाथी जैसी हो, पर सुरता इतनी सूक्ष्म और एकाग्र हो कि जैसे धागा सुई के छोटे-से छेद में सहज प्रवेश करता है ।

*Walk with the strength of an elephant and
focus with the fineness of a thread through a needle.*

भाग 5 साहस से प्रेम की ओर

सत्य में दृढ़ रहें,
प्रियतम परमात्मा में अपनापन रखें,
और प्रेम से निर्भय बनें ।

साहस जगाएँ → निष्ठा में दृढ़ हों →
भय से मुक्त हों → सत्य को अनुभव करें →
प्रेम में गहरे उतरें → और आनंद में स्थित हों ।
यही साहस से प्रेम और आनंद की यात्रा है ।

“Let courage awaken, let truth become your ground, and let the Beloved become your refuge. As fear dissolves into faith and love deepens into surrender, life opens into freedom and joy.”

5.27 जागृति के लिए साहसपूर्वक खड़े हों

समझ को जीवन की दिशा बनाइए

पहचान जब साहस बनकर जीवन में उतरती है,

तभी जागृति आगे बढ़ती है।

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।

पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ ॥

जीवन में सही बात जानना ही पर्याप्त नहीं; उस पर चलने का साहस और दृढ़ संकल्प भी चाहिए। समग्र आध्यात्मिक जागृति के महान उद्देश्य को पहचानें और उसकी सेवा में आगे बढ़ें। प्रियतम परमात्मा की इच्छा को हृदय से स्वीकार कर कर्म करें और विश्वास रखें कि उनका साथ और मार्गदर्शन सदा हमारे साथ है।

मार्ग की बाधाओं, सांसारिक आकर्षणों, नकारात्मक प्रभावों या दूसरों के दबाव से अपने लक्ष्य से न भटके। दिशा स्पष्ट रखें, हिम्मत बाँधें और प्रियतम के भरोसे निरंतर आगे बढ़ते रहें।

*Awakening begins when
courage turns understanding into a way of life.*

5.28 तैयारी पूरी हो, तो सीमाओं के पार बढ़ो

संकल्प से गति और प्रेम से असीम संभावना तक
पूरी तैयारी करो, प्रेम से स्वयं को भर लो और अपनी बनाई
सीमाओं को तोड़कर लक्ष्य की ओर पूरी शक्ति से बढ़ो ।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़ ।

सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़ ॥

बड़े लक्ष्य केवल इच्छा से पूरे नहीं होते; उनके लिए
पूरी तैयारी और आगे बढ़ने की तत्परता चाहिए । आत्म-जागनी
की यात्रा में जड़ मान्यताओं, भय और अपनी बनाई सीमाओं में
अटके रहने के बजाय उनसे आगे निकलने का साहस करें ।

अपने विचार, भाव, कर्म और पूरी जीवन-ऊर्जा को
इस्क और प्रेम की चेतना से भरकर आगे बढ़ें । जब दिशा स्पष्ट
हो और हृदय प्रेम से भरा हो, तो अपनी संभावनाओं को सीमित
न करें-यही समय है पूरी शक्ति से आगे बढ़ने का ।

*“Prepare fully, fill yourself with love, and move
beyond the limits that hold you back.”*

5.29 सत्य और स्नेह में अडिग रहें

बाधाएँ प्रेम की परीक्षा लें, पर उसे बदल न सकें ।

सत व्रत धारणसों पालिए, जिहां लगे ऊभी देह ।

अनेक विघन पड़े जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह ॥

सत्य और प्रियतम के प्रति स्नेह यदि केवल अनुकूल परिस्थितियों में बना रहे, तो उसकी गहराई अभी परखी नहीं गई। विरोध, बाधा या कठिनाई आए, फिर भी सत्य का आचरण और हृदय का स्नेह न छूटे-यही दृढ़ता है। दृढ़ता कठोरता नहीं, बल्कि दिशा की स्थिरता है।

यही बात हमारे पारस्परिक संबंधों पर भी लागू होती है-मतभेद और प्रतिकूलता में भी स्नेह की गाँठ को टूटने न देना, संवाद और मर्यादा बनाए रखना। यही स्नेह को परिस्थिति से ऊपर उठाकर रहनी में उतारने का अभ्यास है।

*Let circumstances test your commitment,
but never decide it.*

5.30 प्रेम से जन्मी निर्भयता

जब प्रेम भय से गहरा होता है,
तो भय हृदय पर शासन नहीं कर पाता ।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें,
गुन अंग इन्द्री से होत रहित ।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत ॥

जब दिव्य प्रेम गहराता है, तो भय का प्रभाव कम होने लगता है । ब्रह्मात्मा देह, इन्द्रियों, मन और गुणों की सीमाओं से ऊपर उठकर ऐसी आंतरिक स्थिरता पाती है कि आग, हिंसक जीव या अन्य भय उसे विचलित नहीं कर पाते ।

यह निर्भयता लापरवाही नहीं है-वास्तविक खतरे में सावधानी आवश्यक है; पर भय हमारे निर्णयों और चेतना पर हावी न हो । प्रेम की सच्ची परतीत वही है, जो भीतर निर्भयता जगाए और प्रियतम पर भरोसे को अटल बनाए ।

*When love becomes deeper than fear,
fear can no longer rule the heart.*

5.31 अनुभव से प्रेम तक

केवल मान्यता नहीं-भीतर की अनुभूति
जानिए • विचारिए • अनुभव कीजिए • प्रेम में बढ़िए

आतम अंतःकरन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख ।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, पर आतम सनमुख ॥

जो सुना है उस पर विचार करें; जो समझा है उसे अनुभव में परखें । जब समझ अनुभव में उतरती है तो वह केवल धारणा नहीं रहती; उससे भीतर प्रेम जाग सकता है ।

अपने भीतर अनुभव हो रहे आनंद को पहचानिए । जैसे-जैसे यह आनंद गहरा होता है, प्रियतम के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है । यह प्रेम माया के आकर्षण को कम करता है और अंततः आत्मा को अपने परमात्म स्वरूप की पहचान की ओर ले जाता है ।

Reflect deeply.

Experience sincerely.

Let understanding ripen into love.

**5.32 प्रेम का प्रगटन - संबंध की साक्षी से
संबंध को केवल जानें नहीं-भीतर उसकी साक्षी पाएँ;
सच्ची पहचान से ही प्रेम प्रगट होता है ।**

**समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख ।
तो लों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख ॥**

केवल बहुत प्रयास करने या आध्यात्मिक बातें जान लेने से पार के नित्य प्रेमानंद का अनुभव नहीं होता; उसके लिए यथार्थ बोध आवश्यक है । यह बोध तब गहरा होता है जब अपने निज स्वरूप और प्रियतम से दिव्य संबंध की साक्षी भीतर से मिलने लगे ।

जब यह संबंध केवल सुनी या मानी हुई बात न रहकर अंतःकरण की पहचान बनता है, तब प्रियतम के प्रति प्रेम भी स्वाभाविक रूप से प्रगट और गहरा होने लगता है । इसलिए यात्रा केवल “मैं जानता हूँ” से नहीं, “मैं भीतर पहचानता और अनुभव करता हूँ” की ओर है ।

*Love becomes real when a known relationship
turns into an inner recognition.*

5.33 परमात्मा से रिश्ता

भय और माँग से आगे-प्रेम और अपनापन
भक्ति का शिखर केवल माँगना नहीं-अपनापन है ।

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक ।
जब आतम प्रेम सों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी ॥

आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत नियम, अनुशासन या आवश्यकता से हो सकती है; उसकी गहराई प्रेम में खुलती है । इच्छा पूछती है-मुझे क्या मिलेगा? प्रेम पूछता है-मैं अपने प्रियतम से कैसे जुड़ा रहूँ ? आज कुछ माँगे बिना दो मिनट केवल शुक्राना और प्रेम-स्मरण करें ।

करोड़ों कल्पों का मार्ग क्यों न हो, प्रेम उसे क्षण मात्र में पार करवा देता है । जैसे ही आत्मा प्रेमरंग में रंग जाती है उसी समय उसकी अन्तर्दृष्टि खुल जाती है ।

*“Beyond fear and asking begins a deeper prayer:
Beloved, let me remember You.”*

5.34 हर पल आनंद से चलिए

आध्यात्मिक यात्रा बोझ क्यों बने ?

हँसते • खेलते • जागते चलिए

आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर ।
हँसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर ॥

यदि हमारा मूल आत्मीय स्वभाव आनन्दमय है, तो उसकी ओर चलने वाली यात्रा केवल बोझ और भय की यात्रा क्यों बने ? प्रेम, सेवा, परिवार, प्रकृति, स्मरण और शुक्राना में आनंद की झलक मिल सकती है । यही वर्तमान आत्म-जागनी के समय की विशेषता है ।

साधना को केवल कर्तव्य न बनाएँ-प्रेम से जिएँ; यात्रा को केवल सहें नहीं-जागते हुए उसका आनंद लें ।

“The spiritual journey is not meant only to be endured—it can be lived with wonder and joy.”

भाग 6

प्रकट से मूल की ओर

जो दिखाई देता है, उससे आगे बढ़कर
उसके आधार और अपने मूल सम्बन्ध को पहचानें।

तारतम से विवेक जागे → सतगुरु से दिशा मिले →
निराकार के पार दृष्टि खुले → अक्षरातीत की पहचान हो →
सनातन सत्य का बोध हो → धार्मिक एकता की दृष्टि जगे →
मानव-एकता जीवन में उतरे → और अपने मूल सम्बन्ध की
पहचान हो।

यही प्रकट से मूल की ओर लौटने की यात्रा है।

*“Look beyond what appears to the Source from which it
arises. As discernment deepens and vision opens beyond
the manifest, we awaken to the Aksharatit Beloved, our
eternal relationship, and the unity that embraces all
humanity.”*

6.35 तारतम ज्ञान: केवल जानने के लिए नहीं, जागने के लिए

जो ज्ञान हमारी दृष्टि बदल दे-वही तारतम का प्रकाश है।

तारतम जोत उद्योत है, तिन थे कहा होय।

एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए ॥

तारतम वह ज्ञान-प्रकाश है, जो आत्मा को भ्रम और सीमित पहचान से जगाकर अपने वास्तविक स्वरूप, परब्रह्म और मूल सम्बन्ध की पहचान कराता है-और उस पहचान को प्रेम तथा रहनी में उतारने की दिशा देता है।

प्रतिदिन वाणी की एक चौपाई पढ़िए, उसके अर्थ पर विचारिए, अपने जीवन में परखिए और जो समझ में आए, उसे रहनी में उतारिए। साथ ही, बीतक साहब को केवल परम्परा का इतिहास न समझें। उसका मनन-मंथन अपने वर्तमान जीवन और चेतना के दर्पण के रूप में करें। तारतम हमें दृष्टि देता है; बीतक उस दृष्टि में स्वयं को देखने का दर्पण बन सकता है।

*“Tartam is not merely wisdom to be known,
but a light to awaken by. Beetak is the lamp that
lights our present moment.”*

6.36 प्रेमपूर्वक पिया के सम्मुख करे वही सतगुरु

दिशा बदलने से दर्शन और प्रेममय सन्मुखता तक
सच्चा सतगुरु वही, जो हमारी भटकी सुरता की दिशा बदलकर
प्रियतम की पहचान कराए और प्रेम से उनके सन्मुख कर दे।

महामत कहे गुरु सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटी से उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख ॥

सतगुरु ज्ञान देने के साथ साथ माया के प्रभाव में हमारी
भटकी सुरता की दिशा बदलकर अलख प्रियतम की पहचान
कराते हैं और प्रेमपूर्वक उनके सन्मुख ले जाते हैं। सतगुरु की
कसौटी यही है कि उनका ज्ञान हमें भटकाव से पहचान और
पहचान से प्रेममय सन्मुखता की ओर ले जाए।

*“A true Satguru turns our
wandering awareness toward the Beloved
from knowing about Him
to lovingly facing Him.”*

6.37 निराकार के पार

अपने मूल की पहचान

दृश्य पर मत रुकिए; निराकार पर भी मत रुकिए-भेद को
जानकर मूल की ओर बढ़िए ।

निराकार के पार, तारतम को जागनी भयो सार ।
अछर पार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र ॥

सामान्य दृष्टि पहले दृश्य जगत को देखती है ।
आध्यात्मिक खोज उससे आगे अदृश्य और निराकार की ओर
बढ़ सकती है; लेकिन तारतम वाणी की यात्रा निराकार के पार
के भी पार परम अद्वैत सच्चिदानन्द परब्रह्म की प्रेमानन्द लीला में
प्रवेश कराती है ।

‘पार’ या ‘परे’ का अर्थ निषेध नहीं, बल्कि भेद को
समझते हुए अधिक व्यापक सत्य की ओर बढ़ना है-सभी रूपों
और संबंधों को स्वीकारते हुए भी उनसे सीमित न होना । तारतम
दृष्टि में यह अक्षर का भेद समझकर अक्षरातीत प्रियतम और
अपने मूल सम्बन्ध की पहचान की ओर बढ़ना है ।

*“Beyond the visible and the formless,
seek the source and your original relation.”*

6.38 अक्षरातीत सच्चिदानन्द परब्रह्म

आत्मा का परम मूल

मूल की पहचान केवल “मैं कौन हूँ ?” नहीं;

“मैं किसका हूँ ?” भी खोलती है।

केवल ब्रह्म अछरातीत, सत-चित-आनन्द ब्रह्म ।
ए कहयो मोहे नेहे चेकर, इन आनन्द में हम तुम ॥

तारतम वाणी के अनुसार क्षर परिवर्तनशील जगत है; अक्षर उससे परे अविनाशी ब्रह्म है; और अक्षर से भी पार अक्षरातीत-परात्पर सच्चिदानन्द परब्रह्म हैं।

परमधाम आत्मा का मूल घर है, जहाँ प्रियतम के साथ अखण्ड प्रेम और आनन्द का शाश्वत सम्बन्ध है।

To know the Aksharatit is to awaken to the soul's eternal home and relationship with the Supreme.

6.39 सनातन-सृष्टि से पूर्व भी जो सत् था

प्राचीनता से आगे-मूल नित्य सत्ता की खोज
सनातन की कसौटी केवल प्राचीनता नहीं-वह मूल नित्य सत्ता
है जो परिवर्तनों के पार विद्यमान रहती है ।

ना ईश्वर ना मूल प्रकृति, ता दिन की कहूँ आपा बीती ।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत ॥

“सनातन” की खोज केवल वर्तमान सृष्टि में नहीं, बल्कि सृष्टि से पूर्व विद्यमान मूल सत् में होनी चाहिए । जब ईश्वर का सृष्टि-संचालक स्वरूप और मूल प्रकृति भी प्रकट नहीं हुए थे, तब भी वह मूल सत्ता विद्यमान थी ।

अक्षर ब्रह्म की निज लीला और इच्छा से मूल प्रकृति का प्राकट्य हमें दृश्य सृष्टि से उसके कारण और कारण से भी उसके मूल आधार की ओर देखने की दृष्टि देता है ।

*The eternal is what remains real before, through,
and beyond creation.*

6.40 एक परमात्मा • एक मानवता

नाम अनेक-मूल एक

अपनी पहचान हमें विशिष्ट बनाए-विभाजित नहीं ।

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक ।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक ॥

परमात्मा के नाम, धर्मों के भेष, भाषाएँ और परम्पराएँ भिन्न हो सकती हैं । विविधता को मिटाना आवश्यक नहीं; उसके कारण पैदा होने वाले द्वेष और भेदभाव से ऊपर उठना आवश्यक है ।

अपनी श्रद्धा में दृढ़ रहते हुए दूसरे का सम्मान करना और विविधता के भीतर मूल एकता पहचानना तारतम्य दृष्टि का महत्वपूर्ण आयाम है ।

*Different names may distinguish us; our deepest
belonging to the One unites us.*

6.41 भिन्न वाणियों में मूल आशय की एकता देखना
शब्दों और परंपराओं के भेद में मत अटके-उनके भीतर छिपे
मूल सत्य और साझा आशय को पहचानें।

**सास्त्र ले चले सतगुरु सोई,
बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ॥**

अलग-अलग धर्मग्रन्थों की भाषा, प्रतीक और परंपराएँ भिन्न हो सकती हैं, पर सतगुरु उनके मूल आशय को तारतम्य दृष्टि से जोड़कर समझाते हैं। वे शब्दों और बाहरी भेदों में उलझाने के बजाय उनके भीतर छिपे सत्य की ओर हमारी दृष्टि ले जाते हैं। जहाँ अधूरी समझ केवल भिन्नता और विरोध देखती है, वहीं गहरी समझ विविधता के भीतर अंतर्निहित एकता को पहचानने लगती है। इसलिए किसी दूसरे धर्मग्रन्थ को अस्वीकार करने से पहले उसके शब्दों के पीछे छिपे मूल भाव और सत्य को समझने का प्रयास करें।

“Wisdom looks beyond different words and traditions to recognize the deeper truth they seek to express.”

6.42 एक परमात्मा, एक मानव-जाति

पहचान जो विभाजन से बड़ी है

पहचान हमें विशिष्ट बनाए-विभाजित नहीं; सबका परमात्मा एक है, इसलिए सबको एक मानव-परिवार की दृष्टि से देखें।

जात एक खसम की, और न कोई जात।

एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात ॥

भाषा, परिवार, जाति और संस्कृति हमारी अलग-अलग सामाजिक पहचानें हो सकती हैं, पर हमारी मूल मानवीय पहचान इन भेदों से बड़ी है। जब सबका धनी एक है, तो मानव-जाति भी मूलतः एक है और दुनिया भी एक साझा परिवार है।

यह बोध हमें ऊँच-नीच और भेदभाव से ऊपर उठकर हर व्यक्ति में समान मानवीय गरिमा देखने की दृष्टि देता है। अपनी विशिष्ट पहचान को प्रेम से जिएँ, लेकिन उसे किसी दूसरे से दूरी या श्रेष्ठता का कारण न बनने दें।

*“Our identities may distinguish us;
our deepest belonging unites us.”*

6.43 जब भीतर मूल अंकुर जागता है

खोज का फल-जीवंत अनुभूति

साधना की पूर्णता केवल कुछ छोड़ने में नहीं, बल्कि अपने मूल प्रेम और मूल सम्बन्ध को भीतर जागता हुआ अनुभव करने में है।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूँ, जो उदया मूल अंकुर ॥

अंतर्यात्रा केवल भय, मोह और अहंकार से मुक्त होने की यात्रा नहीं है। उसका सकारात्मक फल है-प्रियतम के साथ अपने मूल सम्बन्ध का जागरण।

जब यह पहचान केवल विचार या ज्ञान नहीं रहती, बल्कि हृदय की जीवंत अनुभूति बन जाती है, तब भीतर प्रेम, पूर्णता और आनंद का मूल अंकुर फूट पड़ता है। प्रियतम परमात्मा जब हृदय में विराजमान हो जाते हैं, तो अभाव का भाव मिटने लगता है-मानो सब कुछ मिल गया और दुःख का बोझ दूर हो गया। जब मूल पर आत्मिक सम्बन्ध का अंकुर भीतर फूट पड़े, उस सुख को शब्दों में कैसे कहा जाए?

*“When the root of remembrance awakens within,
the heart discovers the joy it was seeking outside.”*

भाग 7 प्रकाश को घर ले जाएँ

जागनी का फल-जीने के ढंग में परिवर्तन ।

सम्पूर्ण यात्रा का सूत्र: घर में रहनी - प्रकाश को साथ ले जाएँ

जागनी अपनी भूल पहचानने से शुरू होती है-“मेरा-मेरा” का बोझ हल्का कर अपने सच्चे स्वरूप को पहचानें, मन को निर्मल करें और ज्ञान को रहनी में उतारें ।

जो हमारे हाथ में है, वह कर्म पूरी निष्ठा से करें और बाकी प्रियतम को सौंप दें । भटकती सुरता को बार-बार भीतर लौटाएँ, चितवनी में स्थिर हों और सत्य व प्रेम में अडिग रहें ।

धीरे-धीरे हम विस्मृति की भूल से याद, मोह से समर्पण, बिखराव से चितवनी और भय से प्रेम की ओर बढ़ते हुए प्रियतम और अपने मूल संबंध में जागते हैं ।

“Awakening is complete when the light we discover within becomes the way we live-at home, in our relationships, and in every ordinary moment. Carry the light home: from forgetfulness to remembrance, from fear to love, and from knowing the Beloved to living in that relationship.”

7.44 जागो, देखो, उठो और आगे बढ़ो

जागरूकता से संकल्प और संकल्प से कर्म तक:
पहले जागो, फिर स्थिति को समझो; दिशा स्पष्ट हो तो दृढ़ता
से उठो और लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाओ ।

सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए ।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पाँऊ भरे आगे सोए ॥

जीवन में बदलाव की शुरुआत जागने से होती है-पहले समझें कि अब तक क्या हुआ और हम कहाँ खड़े हैं । फिर ठहरकर सजगता से वर्तमान स्थिति को देखें और समझें ।

जब दिशा स्पष्ट हो जाए, तो केवल सोचते न रहें; अपने संकल्प, ऊर्जा और उपलब्ध साधनों के साथ खड़े होकर कदम उठाएँ । लक्ष्य कितना भी बड़ा हो, उसकी प्राप्ति अंततः एक-एक जागरूक कदम आगे बढ़ाने से ही होती है ।

“Awaken. Observe. Resolve. Act.

*Every conscious step moves you closer to your
purpose.”*

मंगलमय जीवन के चार संकल्प

निर्मल हृदय • निःस्वार्थ कर्म
• अडिग स्नेह • अटल विश्वास

भीतर निर्मल रहें,
कर्म निःस्वार्थ रखें,
प्रेम में अडिग रहें और
परब्रह्म धनी पर विश्वास रखें ।

Four Resolutions for a Blessed Life

*Pure Heart • Selfless Action •
Steadfast Love • Unwavering Trust*

*Keep your heart pure,
your actions selfless,
remain steadfast in love,
and place your trust in Parabrahm प्राणनाथ.*

7.45 निर्मल हृदय - PURE HEART

शुद्धता भीतर से शुरू होती है
पहले भीतर को निर्मल करें;
बाहर की शुद्धता तभी सार्थक है।

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार ॥

बाहरी स्वच्छता और धार्मिक आचरण का अपना महत्व है, लेकिन सच्ची साधना भीतर से शुरू होती है। अपने मन, भाव और उद्देश्य को ईमानदारी से देखें।

दूसरों को सुधारने से पहले अपने हृदय को निर्मल करने का अभ्यास करें।

“True purity begins within. A clean outer life finds its meaning only when the heart is clean.”

7.46 निःस्वार्थ कर्म - SELFLESS ACTION

भलाई करें, प्रशंसा के लिए नहीं
भलाई करें ताकि किसी को सुख मिले-नाम पाने के लिए नहीं ।

असुभ कर्म जेम लिए निंद्या, सुभ कर्म नामना लई जाय ।
गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंतू थाय ॥

शुभ कर्म का वास्तविक आनंद उसके प्रदर्शन में नहीं,
बल्कि उससे किसी के जीवन में पहुँचे सुख में है ।

जहाँ संभव हो, सेवा बिना नाम, प्रशंसा या प्रतिफल की
अपेक्षा के करें। ऐसा कर्म अहंकार को नहीं, प्रेम को बढ़ाता है ।

“Do good without seeking recognition. The purest service is often the one no one knows you performed. Let the good itself be your reward.”

7.47 प्रेम-भीतर की अजेय शक्ति-

LOVE - THE INVINCIBLE POWER WITHIN

बाधाएँ आएँ पर प्रेम न छूटे, प्रियतम के प्रेम में जड़ें गहरी हों,
तो काम, क्रोध, लोभ और अहंकार हमें डिगा नहीं सकते ।

प्रेम सैन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी ।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी ॥

प्रेम की सेना अत्यंत शक्तिशाली है । जब वह अपने मूल स्वरूप की पहचान, समर्पण और प्रेमरूपी शस्त्र लेकर आगे बढ़ती है, तब माया के काम, क्रोध, लोभ और अहंकार जैसे अस्त्र टिक नहीं पाते ।

जिसके हृदय में प्रियतम का प्रेम और मूल सम्बन्ध जाग गया हो, उसे माया अपने बंधन में नहीं बाँध सकती-ऐसे प्रेम से कोई शक्ति लड़ नहीं सकती ।

“True strength is not defeating others, but becoming so rooted in love that anger, greed, fear, and ego can no longer defeat you.”

7.48 अटल विश्वास - UNWAVERING TRUST

अपना कर्म पूरी निष्ठा से करें, धनी के सामर्थ्य पर भरोसा रखें

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरीनां हरे ।

वली गया काम सराडे चढे, मन चितव्या कारज सरे ॥

जीवन में हर परिस्थिति हमारे नियंत्रण में नहीं होती । जो हमारे हाथ में है, उसे पूरी निष्ठा से करें; लेकिन परिणाम का पूरा बोझ अपने सिर पर न रखें । धनी के सामर्थ्य और कृपा पर विश्वास रखें ।

तारतम ज्ञान के गूढ़ अर्थ जब हृदय में उतरते हैं, तो मन के भ्रम मिटने लगते हैं और संसार की ओर भटकती वृत्तियाँ शांत होने लगती हैं । जब धनी हृदय में विराजमान होकर अपने अंग के प्रति अपना धणीपन निभाते हैं, तब माया रूपी शत्रु का बल स्वतः क्षीण हो जाता है । धनी की कृपा से बिगड़ी दिशा सँवरने लगती है और जीवन के कार्य सहजता से सिद्ध होने लगते हैं ।

“When the Beloved dwells within, illusion loses its hold, obstacles lose their power, and grace opens the way. Do your part, and trust the rest to the Beloved.”

प्रकाश को अपने साथ घर ले जाएँ TAKE THE LIGHT HOME

मंदिर या आश्रम से लौटते समय हाथ में प्रसाद, मन में चौपाई और हृदय में दर्शन का आनंद हो सकता है।

लेकिन एक और प्रसाद साथ ले जाएँ-थोड़ा बदला हुआ जीवन। एक कठोर शब्द कम। एक धन्यवाद अधिक। एक निःस्वार्थ सेवा। थोड़ा कम द्वेष। कुछ क्षण शांत स्मरण।

चाहें तो एक चौपाई चुनें और सात दिन उसे जीकर देखें। केवल यह न पूछें-“आज मैंने क्या देखा?” यह भी पूछें-“आज की जागृति मेरी रहनी में कहाँ दिखाई देगी?”

“The true prasad we carry home is a life gently transformed—one kinder word, one grateful heart, one selfless act, and one teaching truly lived.”

॥ प्रेम प्रणाम जी ॥

॥ सदा आनंद मंगल में रहिए ॥

तारतम वाणी में समग्र साधना के पाँच आयाम

तारतम ज्ञान का उद्देश्य केवल सत्य को जानना नहीं, बल्कि मनुष्य के पूरे जीवन-उसकी दृष्टि, अंतःकरण, संबंध, कर्म और रहनी-को जागृत और रूपांतरित करना है। इसलिए यह देखना आवश्यक है कि वाणी का बोध हमारे जीवन के विभिन्न आयामों में कैसे उतरता है।

इस लघु ग्रंथ में तारतम वाणी की चौपाइयों को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर समझने का प्रयास किया गया है-आत्म-विस्मृति, स्वयं की खोज, मन और अहंकार, चिंता और दुःख, संबंध, सेवा, सुरता, चितवनी तथा प्रियतम से मूल संबंध की पहचान। इसकी मूल यात्रा जानने से जागने, जागने से पहचानने और पहचान से प्रेमपूर्वक जीने की ओर है।

इसी यात्रा को आधुनिक समग्र दृष्टि (Integral Perspective) से देखने पर साधना के पाँच महत्वपूर्ण आयाम उभरते हैं 1. दृष्टि की परिपक्वता, 2. विस्मृति से जागृति की ओर, 3. अपनी छाया का रूपांतरण, 4. अपनी क्षमताओं का विकास, और 5. जागृति को जीवन में उतारना।

यह तारतम वाणी का पारंपरिक वर्गीकरण नहीं, बल्कि वाणी के बोध को अपने सम्पूर्ण जीवन में देखने और परखने का एक आधुनिक आत्म-परीक्षण मानचित्र है। ये पाँच आयाम क्रमिक सीढ़ियाँ नहीं हैं; सभी साथ-साथ विकसित हो सकते हैं और एक ही चौपाई एक से अधिक आयामों को स्पर्श कर सकती है। तारतम वाणी की सभी चौपाइयाँ इन पाँच ही वर्गों में विभाजित होती नजर आती है। इसलिए आगे का वर्गीकरण चौपाइयों के प्रमुख अभिप्राय के आधार पर किया गया है।

1. दृष्टि की परिपक्वता (Growing Up): स्वयं, दूसरों, धर्म और संसार को अधिक व्यापक, विवेकपूर्ण और समावेशी दृष्टि से देखना। केवल मिली हुई मान्यताओं को दोहराने के बजाय प्रश्न, विचार और विभिन्न दृष्टियों के भीतर मूल सत्य को समझना। “सास्त्र ले चले सतगुर सोई...” इसी प्रकार बाहरी भेदों से आगे मूल आशय देखने की प्रेरणा देती है। आप देख सकते हैं कि इन चौपाइयों द्वारा “मान्यता से विवेक की ओर; सीमित दृष्टि से व्यापक दृष्टि की ओर” यह सूत्र

प्रकाशित होता है: 6, 7, 10, 11, 12, 13, 22, 30, 31, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42

2. विस्मृति से याद की ओर (Waking Up): से तात्पर्य अपने निज स्वरूप, प्रियतम और मूल संबंध के प्रति जागना। इसका संबंध जागनी, सुरता, आत्म-पहचान, परमधाम-स्मृति और चितवनी से है। यहाँ मूल प्रश्न है-मैं कौन हूँ, मैं किसकी हूँ और मेरी सुरता किस ओर है ? “एही अपनी जागनी...” जागनी को सीधे निज-सुख की याद, इश्क और सन्मुखता से जोड़ती है। आप देख सकते हैं कि इन चौपाइयों द्वारा “विस्मृति से जागनी; जागनी से याद; याद से निज-संबंध और प्रेम की ओर।” यह सूत्र प्रकाशित होता है: 1, 2, 3, 5, 6, 19, 21, 22, 23, 24, 25, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 43, 44

3. अपनी छाया को प्रकाश में लाने (Cleaning Up): से तात्पर्य है - अपने अहंकार, भय, क्रोध, ईर्ष्या, आसक्ति, चोट, दोषारोपण, दबी भावनाओं और अनदेखी प्रवृत्तियों को पहचानकर रूपांतरित करना। इसमें भीतर दबी सकारात्मक क्षमताओं को पहचानना भी शामिल है। “अपनी छाया...” और

“पहले अपने भीतर देखें” इसी आत्म-परीक्षण को सामने लाती हैं। आप देख सकते हैं कि इन चौपाइयों द्वारा “जो भीतर छिपा है, उसे दबाएँ नहीं-पहचानें और रूपांतरित करें।” यह सूत्र प्रकाशित होता है: 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 20, 22, 30, 45, 47

4. अपनी क्षमताओं को खोलने (Opening Up)

का अर्थ है: विवेक, भाव-संवेदनशीलता, नैतिकता, प्रेम, संवाद, संबंध-क्षमता, साहस और सेवा-बुद्धि जैसी विभिन्न मानवीय क्षमताओं को विकसित करना। “मैं भूलों तो तू मुझे...” याद दिलाती है कि जागनी केवल व्यक्तिगत यात्रा नहीं; हम एक-दूसरे की जागनी के सहयात्री भी हैं। आप देख सकते हैं कि इन चौपाइयों द्वारा “बुद्धि में विवेक, हृदय में प्रेम और संबंधों में संवेदनशीलता।” यह सूत्र प्रकाशित होता है: 6, 12, 13, 14, 15, 16, 19, 20, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 40, 41, 42, 43, 47

5. जागृति को जीवन में उतारने (Showing Up)

का अर्थ है: जो भीतर समझा और जागा है, वह कर्म, संबंध, रहनी, सेवा और उत्तरदायित्व में दिखाई दे। ज्ञान की वास्तविक

कसौटी यही है कि वह हमारे जीने के ढंग को कितना बदलता है। पुस्तक में “सेवा” और “ज्ञान-केवल जानना नहीं, जीकर दिखाना है” इसी दिशा को स्पष्ट करते हैं। आप देख सकते हैं कि इन चौपाइयों द्वारा “जो भीतर जागा है, वह रहनी और सेवा में दिखाई दे।” यह सूत्र प्रकाशित होता है: 4, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 26, 27, 28, 29, 30, 34, 40, 41, 42, 44, 45, 46, 47, 48

पाँच आत्म-परीक्षण प्रश्न

मेरी दृष्टि कितनी व्यापक हो रही है ? मेरी सुरता किस ओर जाग रही है ? मेरे भीतर क्या रूपांतरण माँग रहा है ? मेरी कौन-सी क्षमताएँ अभी खुलनी हैं ? और जो भीतर जागा है, वह मेरी रहनी और सेवा में कहाँ दिखाई दे रहा है ?

दृष्टि परिपक्व हो • सुरता जागे • अंतःकरण निर्मल हो •
क्षमताएँ खुलें • जागृति रहनी और सेवा बने।

इस प्रकार तारतम वाणी

पूरे जीवन को देखने, स्वयं को पहचानने और
प्रेमपूर्वक जीने का दर्पण बनती है।

संक्षिप्त परिचय

श्री निजानन्द-प्रणामी सम्प्रदाय आत्म-पहचान, परमात्मा से अपने मूल सम्बन्ध और मानव जीवन के परम उद्देश्य के जागरण की आध्यात्मिक परम्परा है। इसकी खोज कुछ मूल प्रश्नों से आरम्भ होती है-मैं वास्तव में कौन हूँ ? मेरा मूल सम्बन्ध किससे है ? यह संसार क्या है ? और इस मानव जीवन में मुझे किस चेतना में जागना है ? इस दृष्टि से निजानन्द दर्शन केवल धार्मिक मान्यताओं या कर्मकाण्डों की व्यवस्था नहीं, बल्कि आत्म-खोज, विवेक, जागरण और प्रेमानन्द की जीवन्त यात्रा है।

अखंड आनन्द का मार्ग प्रकाशित करने वाली इस परम्परा का आरम्भ नवतनपुरी, जामनगर में निजानन्द स्वामी सतगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (1581-1655 ई.) की गहन आध्यात्मिक खोज और अनुभूति से जुड़ा है। इसी धारा को महामति श्री प्राणनाथ जी (1618-1694 ई.) ने महामंगलपुरी, सूरत से व्यापक स्वरूप दिया और अंततः अपने लगभग 5000

सुन्दरसाथ सहित श्री 5 पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना को जागनी का प्रमुख केन्द्र बनाया। उनके संदेश में आत्म-जागृति, प्रेम, विवेक और मानव-एकता के साथ विविध धार्मिक परम्पराओं के बीच सत्य की खोज और संवाद को विशेष स्थान मिला।

इस परम्परा का प्रमुख ज्ञान-स्रोत श्री कुलजम स्वरूप-तारतम वाणी (अवतरण काल 1659–1692 ई.) है। विभिन्न स्थानों पर और विभिन्न भाषाओं में अवतरित इसके अंगरूप 14 ग्रंथ आत्म-पहचान, परमात्म-सम्बन्ध, प्रेम-लक्षणा भक्ति, विरह, विवेक, जागरण, परमधाम और जीवन-व्यवहार के अनेक आयाम खोलते हैं। अतः मंदिरों में इसी ज्ञानमयी स्वरूप की सेवा-पधरावनी की जाती है। “ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः” - ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं। तारतम वह ज्ञान-प्रकाश है जो आत्मा को भ्रम से जागृति और अपने मूल स्वरूप की पहचान की ओर ले जाता है। इसलिए वाणी को केवल पढ़ना या सुनना पर्याप्त नहीं; उसके अर्थ पर विचार करना, विवेकपूर्वक परखना और उसे जीवन में उतारना भी इस मार्ग का महत्वपूर्ण पक्ष है।

निजानन्द दृष्टि की एक विशेषता विविधता के भीतर सत्य को तारतम्य युक्ति द्वारा पहचानने का विवेक है । इसका अर्थ सभी मतों और मान्यताओं को बिना भेद-विवेक समान मान लेना नहीं, बल्कि तारतम्य के प्रकाश में विभिन्न विचारों, प्रतीकों, परम्पराओं और अनुभवों का उचित अर्थ, स्तर और स्थान समझना है । इसी कारण तारतम्य वाणी में अनेक धार्मिक परम्पराओं की शब्दावली और प्रतीक मिलते हैं-भेद बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि उनके माध्यम से सत्य की ओर संकेत करने के लिए ।

महामति श्री प्राणनाथ जी का संदेश केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं रहा । उन्होंने औरंगजेब के शासनकाल में धार्मिक उत्पीड़न और जबरन धर्मांतरण का विरोध किया तथा धर्म का वास्तविक, करुणामय स्वरूप समझाने के लिए स्वयं प्रयास किए । इसी उद्देश्य से उनके बारह समर्पित सुंदरसाथ ने भी निर्भय होकर औरंगजेब तक तारतम्य का संदेश पहुँचाने का प्रयास किया । साथ ही अपने समय की

सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों में उन्होंने राजाओं और
राणाओं को धर्म-रक्षा के लिए जागृत करते हुए उद्घोष किया-

राजा ने मलों रे राणे राय तणों,

धरम जातां रे कोई दौड़ो ।

जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो,

नींद निगोड़ी रे छोड़ो ॥

त्रिलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को,

तामें उत्तम हिन्दू धरम ।

इसी संदर्भ में नरवीर केसरी महाराजा छत्रसाल जू
बुंदेला (1649-1731 ई.) के साथ उनका सम्बन्ध निजानन्द
परम्परा के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय बनता है ।
बाल्यावस्था में माता-पिता को खोने के बाद छत्रसाल जी ने
अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन आरम्भ किया और
युवावस्था से ही मुगल सत्ता के विरुद्ध बुंदेलखंड में दीर्घ संघर्ष
किया । ऐतिहासिक स्रोत उन्हें औरंगजेब के शासनकाल में मुगल
प्रभुत्व का प्रतिरोध करने और बुंदेलखंड में स्वतंत्र सत्ता स्थापित
करने वाले प्रमुख शासकों में गिनते हैं ।

उनके जीवन संघर्ष में धर्म-रक्षा, सांस्कृतिक अस्मिता और स्वराज महत्वपूर्ण आयाम थे । यहाँ धर्म-रक्षा का अर्थ केवल युद्ध नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक परिस्थिति में धार्मिक-सांस्कृतिक स्वतंत्रता, सामुदायिक स्वाभिमान और अपनी परम्पराओं के अनुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता की रक्षा के व्यापक अर्थ में समझा जा सकता है । मुगल राजनीतिक प्रभुत्व को चुनौती देते हुए उन्होंने बुंदेलखंड में स्वतंत्र राज्य-सत्ता विकसित की ।

उनके जीवन में निर्णायक आध्यात्मिक मोड़ 1682 ई. में महामति श्री प्राणनाथ जी से मिलन के साथ आया । छत्रसाल जी ने उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार किया और उनके संघर्ष को एक व्यापक आध्यात्मिक दिशा मिली-राज्य केवल सत्ता का साधन नहीं, बल्कि न्याय, लोकसेवा और धर्म-रक्षा का माध्यम भी है । आगे चलकर पन्ना श्री निजानन्द जागनी-परम्परा का एक प्रमुख केन्द्र बना, जो आज भी विश्वभर के श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं के लिए दर्शन एवं आध्यात्मिक प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थल है ।

इस प्रकार महाराजा छत्रसाल जी के जीवन में शौर्य और अध्यात्म, स्वराज और सेवा, धर्म-रक्षा और आत्म-जागरण का विशिष्ट संगम दिखाई देता है । इसलिए इस परम्परा में उनका स्मरण केवल एक राजनीतिक संरक्षक के रूप में नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में भी होता है जिसमें आध्यात्मिक प्रेरणा सामाजिक उत्तरदायित्व और कर्म में अभिव्यक्त हुई ।

यही सूत्र निजानन्द मार्ग के मूल में है-ज्ञान और जीवन, साधना और सेवा, आन्तरिक जागरण और सामाजिक उत्तरदायित्व एक-दूसरे से अलग नहीं हैं । यहाँ कहनी के साथ रहनी का विशेष महत्व है । ज्ञान की सार्थकता तब है जब वह प्रेम, सत्य, करुणा, विनम्रता, सेवा और विवेक के रूप में जीवन-व्यवहार में प्रकट हो ।

इसलिए निजानन्द की यात्रा संसार से पलायन की नहीं, बल्कि जागृत चेतना के साथ संसार में जीने की यात्रा है-जानने से जागने, जागने से पहचानने और पहचान से प्रेमपूर्वक जीने की यात्रा ।

इसी जागनी-परम्परा की सेवा में पन्ना (म.प्र.) एवं अन्य पूरियों सहित विश्वभर में अनेकों संस्थाएं समर्पित है। इन में ब्रह्मलीन धर्मवीर जागनी रत्न पूज्य सरकार श्री की प्रेरणा से स्थापित श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी एवं वडोदरा का विशिष्ट योगदान रहा है। वडोदरा स्थित श्री प्राणनाथ जी मंदिर एक ऐसा विशिष्ट जागनी केन्द्र है, जहां से श्री निजानन्द आत्म-जागृति अभियान विभिन्न मल्टीमीडिया माध्यमों, साहित्य और स्वयंसेवक सुन्दरसाथ की सेवाओं द्वारा पिछले 30 वर्ष से आगे बढ़ाया जा रहा है।

इन प्रयासों में सत्य दर्शन एवं श्री प्राणनाथ टीवी सीरियल, छत्रसाल वेब सीरीज, श्री प्राणनाथ वाणी गायन, परमधाम दर्शन एवं निजा-आनंदी एनिमेशन सीरीज तथा तारतम वाणी और श्री बीतक साहेब की टीकाओं सहित विविध प्रकाशन सम्मिलित हैं। आज आप इन्हें यूट्यूब और वेब साइट्स के माध्यम से देख सकते हैं। उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि ज्ञान को सरल, सुलभ और जीवन-सापेक्ष बनाकर आत्म-जागृति की ओर प्रेरित करना है।

इस परम्परा के साधकों को प्रेमपूर्वक “सुन्दरसाथ” कहा जाता है-अर्थात् सत्य, प्रेम और आत्म-जागृति की यात्रा में साथ चलने वाली संगति । प्रस्तुत अनमोल मोतियों के माध्यम से आमंत्रण भी सरल है-खुले मन से सुनें, समझें, प्रश्न करें, तारतम के प्रकाश में परखें और जो सत्य स्पष्ट होता जाए, उसे अपनी रहनी में उतारें ।

संक्षेप में-निजानन्द अपने निज-स्वरूप की पहचान, प्रियतम परमात्मा से अपने मूल सम्बन्ध के जागरण और उस पहचान को प्रेममय रहनी में उतारने की जीवन-यात्रा है; तारतम उस यात्रा को प्रकाशित करने वाला ज्ञान-प्रकाश है । आइए, तारतम ब्रह्मवाणी के इन चुनिंदा मोतियों को केवल जानें नहीं, बल्कि अपने जीवन और व्यवहार का शृंगार बनाएँ ।

इस प्रसादी की यात्रा है-जानने से जागने, पहचानने और प्रेमपूर्वक जीने की ओर । हर पन्ने को जागनी और रहनी का छोटा अभ्यास बनाएँ ।

पढ़ें → विचारें → हृदय में उतारें → रहनी में प्रकट करें ।

सदा आनंद-मंगल में रहिए ।

॥ प्रणाम = प्रणाम जी ॥

भारतीय संस्कृति का प्राचीनतम अभिवादन

मैं आत्मा हूँ, तुम भी आत्मा हो ।

स्वरूप से हम एक हैं, केवल रूप से अलग दिखाई देते हैं ।

प्रणाम करते समय हम एक-दूसरे के भीतर स्थित आत्म-चेतना

और दिव्य गुणों का सम्मान करते हैं ।

हमारी मंगलकामना है कि हमारे हृदय में

प्रियतम परमात्मा का नूर, प्रेम, शांति, निर्मलता, करुणा, क्षमा

और एकत्व का भाव निरंतर बढ़ता रहे ।

यह आत्मीय भाव हमें एक-दूसरे से और

समस्त सृष्टि से जोड़ते हुए प्रियतम के प्रेमानंद की ओर ले जाए ।

यही 'प्रणाम' का भाव है-एक-दूसरे में आत्मीयता का सम्मान

और सबके आनंद-मंगल की कामना ।

सप्रेम प्रणाम - प्रणाम जी

तारतम वाणी में प्रेम की यात्रा पहचान से मिलन तक

सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास ।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सरूप बृज रास ॥
पंथ होवे कोट कल्प, प्रेम पोहोचावे मिने पलक ।
जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी ॥
प्रेम आतम दृष्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर दृष्ट न जोड़े ।
पिया के चितसों चित न मोड़े, प्रेम और सबन सों तोड़े ॥
जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी ।
जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग ॥
जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल ।
जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज ॥
प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी ।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी ॥
याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान ।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल ॥
कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान ।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए ॥

....